<u>शैक्षिक विषय की आवश्यकता –</u>

विषयों के ज्ञान का विकास एक उद्देश्य पूर्ण किया है। उद्देश्य विषय विशिष्ट शैक्षिक उद्देश्यों को प्रभावशाली एवं उपयुक्त ढंग से प्राप्त करना है। शिक्षण अधिगम उद्देश्यों को प्रभावशाली एवं उपयुक्त ढंग से पूर्ण करने में सहायक सिद्ध होता है। ध्यान विषयों की आवश्यकता निम्नलिखित हैं-

१. **आवश्यकताओं की पूर्ति –**

राष्ट्रीय विचारशील सामाजिक ,दार्शनिक, एवं मनोवैज्ञानिक विचारों की पूर्ति हेतु विषयों के ज्ञान की आवश्यकता होती है।

२. **उद्देश्यों का निर्धारण –**

विषयों के ज्ञान की आवश्यकता उद्देश्यों के निर्धारण में होती है क्योंकि इसकी सहायता से ही ग्रेड विशिष्ट अवस्था एवं शिक्षा स्तर पर शिक्षण अधिगम उद्देश्यों को निर्धारित किया जा सकता है।

३. **रूप देने में –**

विषयों के ज्ञान की आवश्यकता विशेष रूप से क्रिया केंद्रित, विषय केंद्रित एवं संतुलित पाठ्यचर्या के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

<u>शैक्षिक विषय की विशेषताएं</u>

वास्तव में एक विषय एक अलग अध्ययन विषय शैक्षिक विषय है यह निर्धारित करने के लिए मान हो और विशेषताओं की एक लंबी सूची है। अध्ययन विषय शैक्षिक विषय की निम्न विशेषताएं होती हैं जिनके आधार पर उसे शैक्षिक विषय या अध्ययन विषय कहा जाता है-

१. शैक्षिक विषयों में रिसर्च का एक विशेष उद्देश्य होता है (उदाहरण के लिए कानून, समाज राजनीति) हालांकि यह उद्देश्य किसी दूसरे अध्ययन विषय का भी हो सकता है।
२. शैक्षिक विषयों के सिद्धांत और अवधारणाएं होती हैं जिनकी सहायता से विशेष रूप से संग्रहित ज्ञान को संगठित किया जा सकता है।
३. सिख विषयों की अपनी विशिष्ट शब्दावली होती है या तकनीकी भाषा होती है जो उन शैक्षिक विषयों में हुई रिसर्च के अनुसार समायोजित होती है।
४. शैक्षिक विषयों की विशिष्ट रिसर्च विधियां होती हैं जो उनकी रिसर्च आवश्यकताओं के अनुसार विकसित हुई है और वह उनके लिए बहुत आवश्यक है।
५. शैक्षिक विषयों का एक विशेष ज्ञान संग्रह होता है जिसका संबंध रिसर्च के उद्देश्य से होता है जो उनसे संबंधित होता है और वह ज्ञान किसी दूसरे शैक्षिक विषय में नहीं होता।

<u>स्कूली पाठ्यक्रम में अध्ययन विषयों के ज्ञान की भूमिका एवं विद्यालय विषयों के क्षेत्र</u>

पाठ्यक्रम और अनुदेशन आत्मक क्रियाओं में विषयों की प्रधानता होती है। स्कूलों को भावी पीढ़ी का अनिवार्य रूप से शैक्षिक विषयों का शिक्षण करना पड़ता है के गणित, रसायन शास्त्र, भूगोल, इतिहास और अर्थशास्त्र शिक्षकों के द्वारा कक्षा में शिक्षण करने के लिए अध्ययन विषयों की विषय वस्तु में परिवर्तन करना पड़ता है।

विषयों की प्रकृति व गुणों के आधार पर शैक्षिक विषय के अध्ययन क्षेत्र को मुख्य रूप से तीन क्षेत्रों में विभाजित किया गया है-

१. सामाजिक विज्ञान
२. प्राकृतिक विज्ञान
३. भाषा विज्ञान

<u>विद्यालय विषयों का क्षेत्र</u>

विद्यालय विषयों का क्षेत्र विद्यालय स्तर पर सामान्यतः पढ़ाए जाने वाले विभिन्न विषयों को इंगित करता है। विद्यालय शिक्षा के व्यापक क्षेत्र में मानविकी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान और गणित का महत्वपूर्ण स्थान होता है। जब मनुष्य द्वारा शिक्षा का विचार किया गया तो इसने मानव जीवन के दो मौलिक पहलुओं की पहचान की – पहला मानव मस्तिष्क की सबसे महत्वपूर्ण शक्तियों एवं तथा दूसरा भौतिक जीवन की अनु भाविक आवश्यकताएं। एक अस्तित्वपरक एक स्तर पर कोई एक व्यक्ति को दूसरे से अलग नहीं कर सकता है इसलिए प्रारंभ में शिक्षा की अवधारण ने सदैव इन दोनों को संयोजित करने पर बल दिया है विशेष रूप से अधिगम के आरंभिक दौर में इसके पश्चात कोई वयस्क अवस्था में जीवन यापन हेतु एक अजीब विका को अपनाने के लिए या स्वभाव गत रुचि के कारण ज्ञान के विशेष क्षेत्रों का चुनाव करता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 इसे कुछ इस प्रकार से प्रस्तुत करने का प्रयास करता है – "किसी भी काल और समय में इन्हें व्यापक और चिरस्थाई मानवीय मूल्यों और आकांक्षाओं की सामायिक और प्रासंगिक अभिव्यक्ति कहा जा सकता है"। इस रूप रेखा ने अधिगम क्षेत्रों को श्रेणी वध किया है-१. भाषा २. गणित ३ सामाजिक विज्ञान ४ कला शिक्षा ५. स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा ६. कार्य शिक्षा ७. शांति के लिए शिक्षा। यह रूपरेखा स्पष्ट रूप से उल्लेख करता है-"पाठ्यचर्या संबंधी योजना के लिए प्रासंगिक प्रमुख क्षेत्र लंबे समय से अस्थाई हैं हालांकि सामाजिक आकांक्षाओं में तथा विभिन्न वृहद शास्त्रों के शैक्षणिक अध्ययन में बड़े बदलाव हुए हैं। इसलिए पाठ्यचर्या संबंधी क्षेत्रों के संदर्भ में अध्ययन क्षेत्र एक पाठ्यचर्या रूपरेखा से दूसरे पाठ्यचर्या रूपरेखा में अधिक भिन्न नहीं है परंतु समय के साथ उभरते आवश्यकताओं के अनुसार इनके विशिष्ट बिंदुओं में परिवर्तन देखने को मिलता है।

<u>शैक्षिक विषय, अनुशासन, अनुशासनात्मक ज्ञान, विषय का वर्गीकरण</u>

एक अनुशासन तथा विषय एक दूसरे के साथ उसी प्रकार संबंधित हैं जिस प्रकार पूर्ण और अंश एक अनुशासन संसार के बारे में संपूर्ण ज्ञान की विस्तृत श्रेणी से मिलकर बना है। इसलिए विज्ञान का शैक्षिक अनुशासन उस सभी प्रकार के ज्ञान से मिलकर बना है जो कि विज्ञान के क्षेत्र में सम्मिलित हैं तथा यह क्षेत्र ज्योतिष शास्त्र से लेकर भौतिकी शास्त्र से होते हुए तारा भौतिकी तक के क्षेत्र में सम्मिलित समस्त ज्ञान इसके विपरित विषय शैक्षिक अनुशासन का एक भाग है उदाहरण के लिए कला अनुशासन में भाषा दर्शन शास्त्र मनोविज्ञान इतिहास भूगोल आदि विषय सम्मिलित किए जाते हैं यह विषय कला अनुशासन की विस्तृत श्रेणी में आते हैं।

शैक्षिक विषय के क्षेत्र को मुख्यतः चार भागों में विभाजित किया गया है जो निम्न है-

1.संकायी –

संकायी विषय अध्ययन क्षेत्र एक शैक्षिक विषय के क्षेत्र की परिसीमा होती है इसके अंतर्गत एक ही विषय की प्रकृति सीमाओं विशेषताओं एवं क्षेत्रों का अध्ययन किया जाता है। इसमें अनुसंधान के विशिष्ट लक्ष्य क्षेत्र एवं विधियां होती हैं जो विशिष्ट प्रश्नों के उत्तर ढूंढने का प्रयास करती हैं। इसमें विषय पर आधारित किसी एक ही क्षेत्र विशेष की समस्या का समाधान निकालने का प्रयास किया जाता है क्योंकि कोई समस्या किसी विशेष अध्ययन क्षेत्र के विशिष्ट भाग्य पक्ष से संबंधित होती है जैसे न्याय और समाजशास्त्र इत्यादि इसमें सामान्य उद्देश्य दृष्टांत व नमूना का आदान-प्रदान तथा समान विधि व भाषा काम में ली जाती है।

2. अंतः विषय या अंतर संकायी –

ज्ञान की अंतः विषय प्रकृति बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि अंतः विषय प्रकृति एक गतिविधि है जिसमें दो या दो से अधिक शैक्षणिक विषयों के संयोजन शामिल हैं। यह विधि विभिन्न शैक्षणिक विषयों की सीमाओं के परे से कुछ नया बनाने की सोच से संबंधित है। अंतः विषय या अंतर संकाय की प्रकृति एकीकरण से संबंधित है एकीकरण का शाब्दिक अर्थ है "पूर्ण बनाने के लिए " अंतर विषय प्रकृति के संदर्भ में एकीकरण एक ऐसी प्रकृति है जिसके द्वारा दो या अधिक विषयों को संश्लेषित किया जाता है।

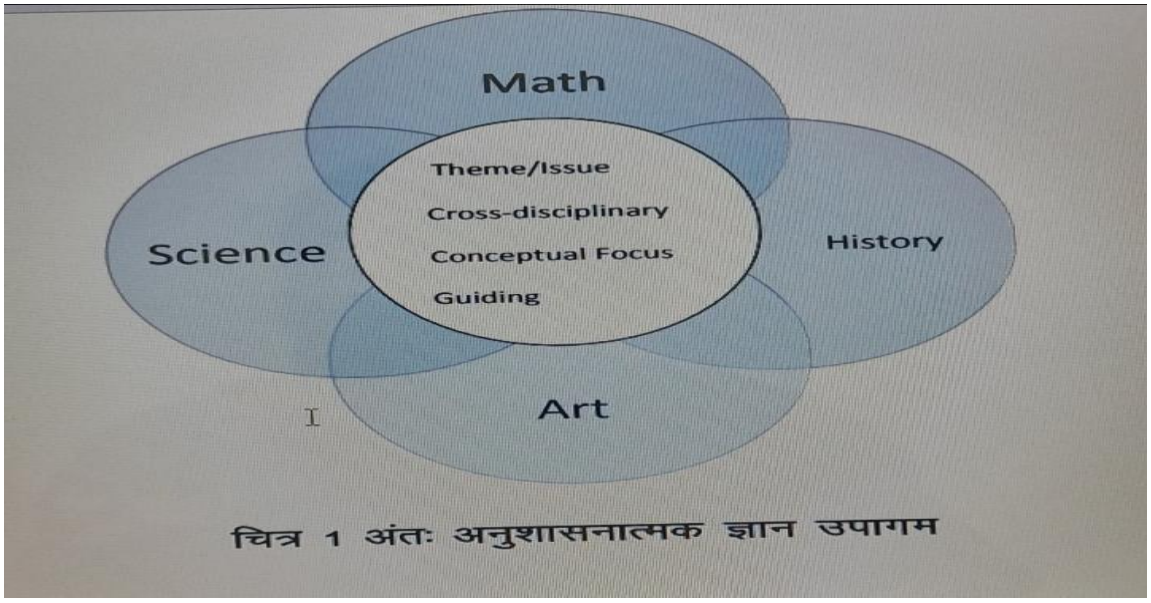

चित्र 1 अंतः अनुशासनात्मक ज्ञान उपागम